# D-I

## Short notes on Raga - Tilang.

- यह राग खमाज थाट से उत्पन्न माना गया है,
- इसमें रे एवं धवं वर्ज्य है।
- इसकी जाति औडव - औडव है।
- वादी स्वर गंधार है,
- संवादी स्वर निषाद है।
- इसे रात्रि के दुसरे प्रहर में इसे गाते बजाते हैं, ।
- इसमें दोनों निषाद का प्रयोग समान रूप से होता है।
- आरोह - सा ग म प नि सां
  अवरोह - सां नि प म ग सा
- कभी - कभी दोनों निषाद का प्रयोग साथ-साथ किया जाता है,
- राग की सुंदरता के लिए कभी - कभी तार सप्तक में रे का प्रयोग कर लेते हैं,
- इसमें अधिकतर छोटा ख्याल और ठुमरी गाई जाती है।
- न्यास के स्वर सा, ग और प